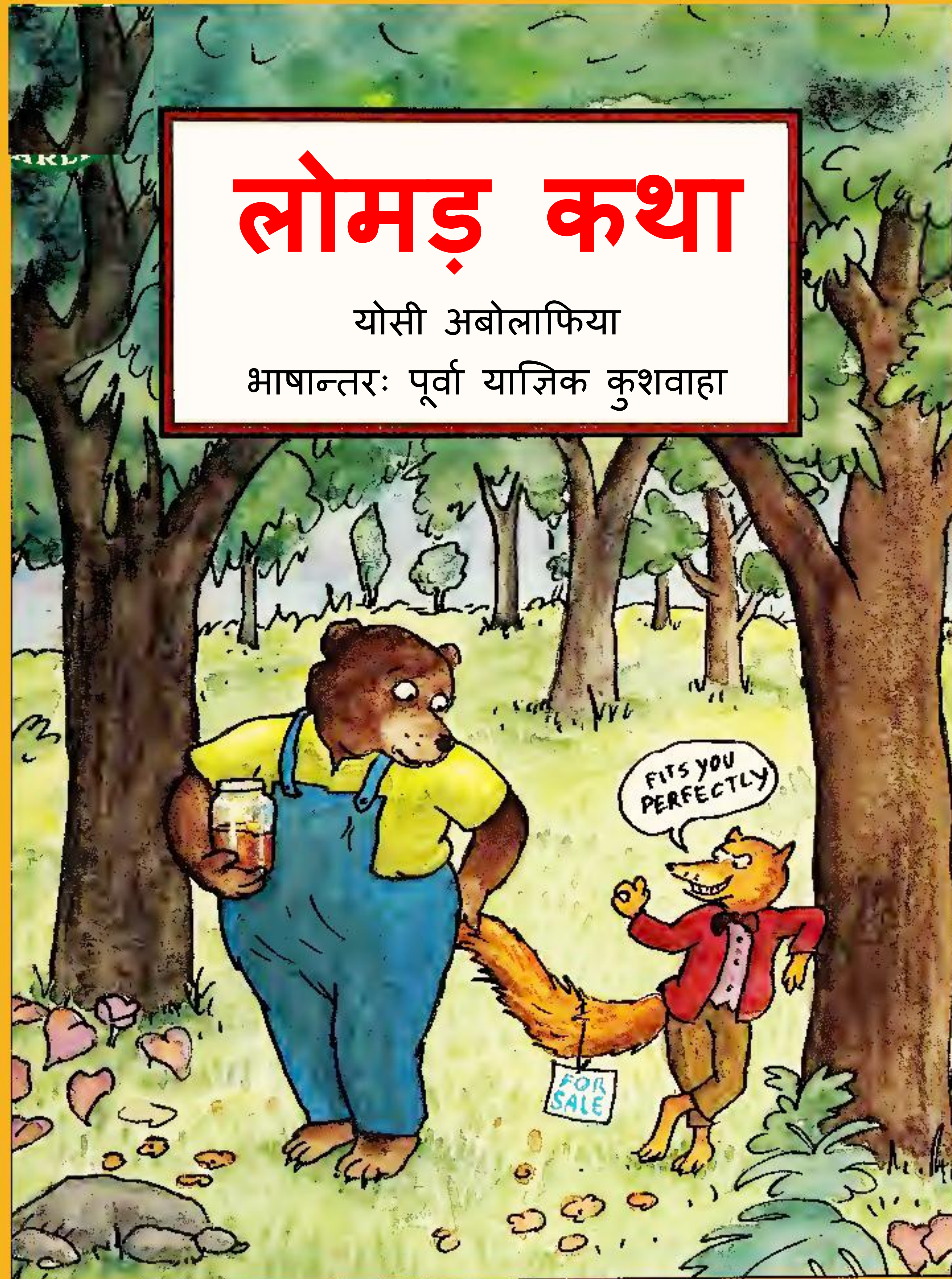
# लोमड़ कथा

योसी अबोलाफिया

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



# लोमड़ कथा



लेखन व चित्रः योसी अबोलाफिया

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



इतामार के लिए

- वाय.ए.



भालू अपनी शीशी से शहद चाटता
खुशी से टहलता जा रहा था।
दो लालची आँखें झाड़ी
के पीछे से उसे घूर रही थीं।

''ओ ठूंठे!'' लोमड़ ने भालू को पुकारा।

''मुझे क्या कह बुलाया तुमने?'' भालू ने तमक कर पूछा।

''ठूंठे,'' लोमड़ बोला। ''यही तो सब तुम्हें
तुम्हारी पीठ पीछे कहते हैं।''

''सचमें?'' भालू ने जानना चाहा।

''हमेशा!'' लोमड़ ने कहा, ''तुम्हारी पूंछ जो नदारद है।''





''बेशक मेरी पूंछ है,'' भालू भड़क कर बोला।

''ख़ैर, वैसे सबकी पूंछ, तुम्हारी पूंछ से बेहतर है,''
लोमड़ पक्के भरोसे से बोला।

''पर तुम्हारी भी एक खुबसूरत पूंछ हो सकती है।''

''सचमें? सो कैसे?'' भालू ने पूछा।

''मैं अपनी खूबसूरत झबरी पूंछ, तुम्हारी ठूंठ से बदल सकता हूँ,
तुम्हारी आधी खाली शहद की शीशी के बदले,'' लोमड़ ने कहा।

“पर तुम्हारी पूंछ भला मैं अपने साथ कैसे ले जा सकता हूँ?”
भालू ने जानना चाहा।

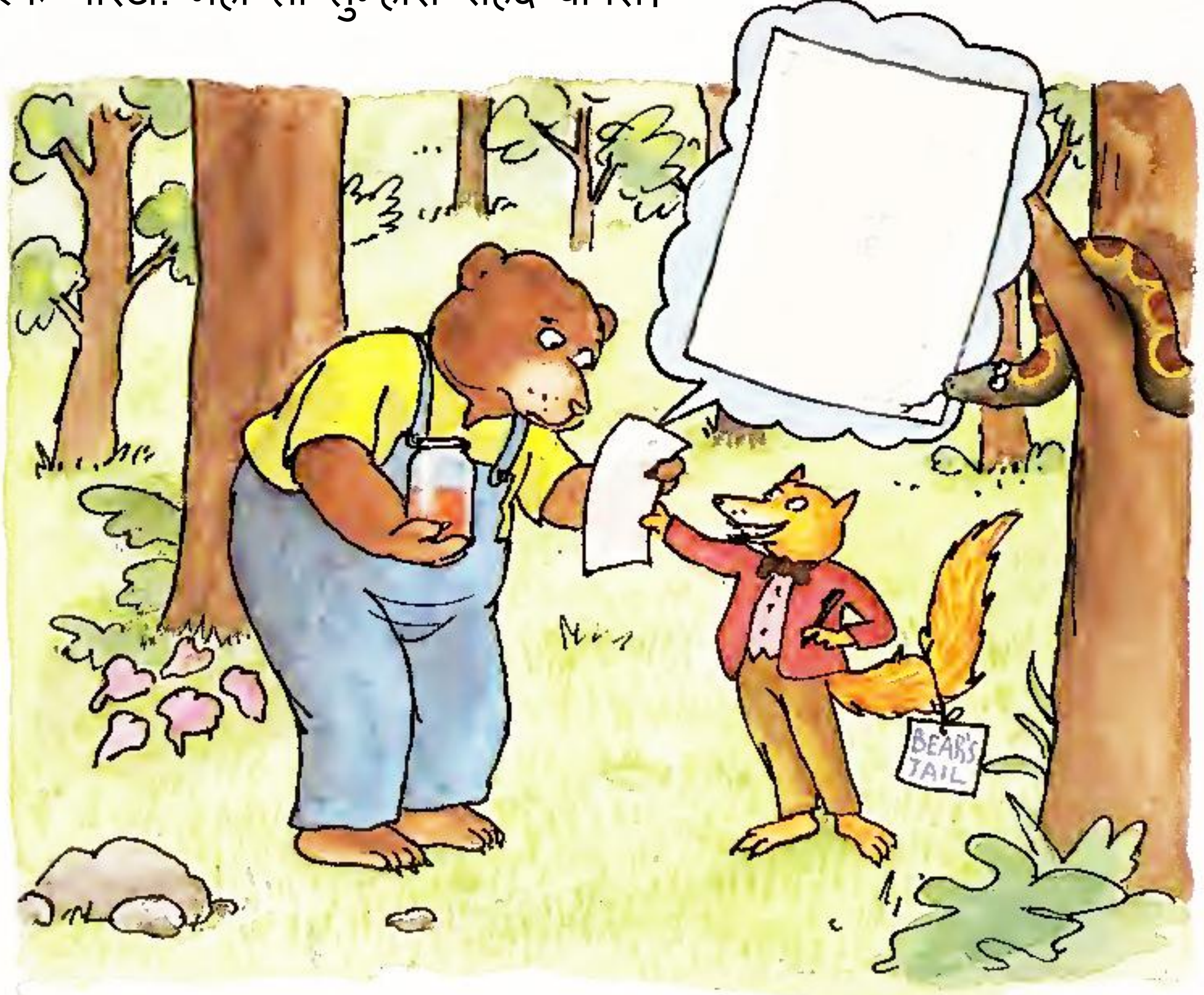
“अरे ले जाने के ज़रूरत नहीं है, मैं उसे तुम्हारे लिए रखे रहूँगा,” लोमड़ बोला।
“तुम्हें दिख ही रहा होगा कि मैं उसकी कितनी बेहतरीन देखभाल करता हूँ।”

“पर किसीको यह कैसे पता चलेगा कि तुम्हारी पूंछ अब मेरी है?” भालू ने पूछा।

“अरे में उस पर एक निशान लटका दूंगा,” लोमड़ ने उसे भरोसा दिलाया।

“पर अगर तुम आस-पास न हो तो?” भालू ने सवाल किया।

“मैं तुम्हें एक पत्री लिख कर दूंगा,” लोमड़ ने कहा।
“एक गारंटी! नहीं तो तुम्हारा शहद वापस।”






इस बीच नदी के कुछ आगे, चंद जानवर दोपहरी की चाय पी रहे थे।
वे साथ ही मक्कार लोमड़ की चर्चा भी कर रहे थके।

"मैं एक दिन डाल पर बैठा अपना खाना खा रहा था," कौए ने कहा। "इतने में लोमड़ मेरे पास आ कर रुका और बोला, "तुम्हारी जैसी सुन्दर आवाज़ तो किसी दूसरे पाखी की होगी ही नहीं। सो मैंने गाने के लिए चोंच खोली और मेरा बढ़िया पनीर का टुकड़ा नीचे जा गिरा। लोमड़ उसे उठा चलता बना। उसने यह कहने की हिमाकत भी की कि मैं बेसुरा गाता हूँ।"





"उस दिन मैं शाहबलूत के फल इकट्ठे कर रहा था, लोमड़ ने आ कर कहा कि वह मेरी मदद करना चाहता है। जब हम उन्हें इकट्ठा कर चुके वह बोला, "तुम बड़े हो इसलिए तुम्हें बड़ा हिस्सा मिलना चाहिए। उसने मुझे भारी बोरा थमाया। मैं उसे ढो-ढा कर घर लाया। खोला तो पाया कि उसमें पत्थर भरे थे," गधे ने अपनी आपबीती सुनाई।



खरगोश ने कहा, "आज तक मेरा गला ऐंठा हुआ है, क्योंकि मक्कार लोमड़ ने मेरे मीठे अंगूर ले लिए और बदले में खट्टे अंगूर टिकाए। यह कह कि उनमें विटामिन-सी होता है।"

बस उसी पल भालू भी आ पहुँचा। वह बेहद खुश नज़र आ रहा था।



"अब तुम लोग मेरी खिल्ली नहीं उड़ा सकोगे,
क्योंकि अब मेरी भी एक खुबसूरत झबरी पूंछ है," भालू ने ऐलान किया।
"तुम्हारी खिल्ली भला कौन उड़ा रहा है?" और
"कौन-सी पूंछ की बात कर रहे हो?" जानवरों ने सवाल दागे।
भालू ने उन्हें लोमड़ की लिखी पत्री दिखाई।
"हमारे दल में तुम्हारा भी स्वागत है!" गधे ने कहा।
"उसने तुम से क्या ऐंठ लिया?"
"मेरा शहद," भालू ने जवाब दिया।





"उस पत्री को अपनी ठूंठी पूंछ पर लगा हिलाते रहो।
लोमड़ अपनी पूंछ से कभी जुदा न होगा," खरगोश ने कहा।
"दोस्तों लोमड को सबक सिखाने का समय आ चुका है," कौए ने सुझाया।
"पर कैसे?" भालू ने पूछा।
"मुझे पता है," कौए ने जवाब दिया।
"उसे याद दिलाते रहना होगा कि उसकी पूंछ तुम्हारी है।"
"मैं फौरन जाता हूँ," भालू बोला।
"रुको," कौए ने कहा, "हम सब चलेंगे। पर आज रात। देर से।"



आधी रात हो चुकी थी। लोमड़ अपनी मांद में गहरी नींद सो रहा था। अचानक उसने दरवाज़े पर थाप सुनी। 'रात में इस वक्त भला कौन होगा?'' उसने सोचा।



''मैं हूँ,'' भालू ने आवाज़ दी। ''मैं अपने दोस्तों को अपनी पूंछ दिखाने लाया हूँ।''

''इस वक्त?'' लोमड़ भुनभुनाया। ''सुबह तक इन्तज़ार नहीं कर सकते थे?''



''अरे कुछ ही मिनटों की तो बात है,'' भालू ने नरमी से कहा।

''ठीक है,'' लोमड़ ने जवाब दिया। ''पर जल्दी से देखो और दफ़ा हो जाओ। मुझे और सोना भी तो है।''



''अरे रे!' कौए ने कहा। ''बेचारी पूंछ की हालत तो खस्ता है।''
''तुम्हें रोओं के बारे में भला क्या पता है, कम-अक्ल?'' और
इतना कह लोमड़ ने धड़ से दरवाज़ा बन्द कर दिया।



भालू और उसके दोस्त भालू की मांद में लौट
गए ताकि आगे की योजना बना सकें।





कुछ ही घंटों बाद, भोर होती उसके भी कुछ पहले, भालू फिर से लोमड़ की मांद के सामने हाज़िर था। इस बार अकेले ही।

"मैं अपनी पूंछ संवारने आया हूँ," भालू ने आवाज़ दी।

"क्या?" उनींदे लोमड़ ने कहा। "तुम जब जी में आया तब मुझे हैरान करने नहीं आ सकते!"

"मैं तुम्हारे पास थोड़े ही आया हूँ। मैं तो अपनी पूंछ संवारने आया हूँ। मुझे अन्दर आने दो।"

"ठीक है, ठीक है," लोमड़ कुढ़ कर बोला। "पर जो करना हो जल्दी से करो।"



भालू ने समय बर्बाद नहीं किया। उसने लोमड़ को चौकी पर बिठाया और चालू हो गया।





लोमड़ की पूंछ धोते, निचोड़ते और पूंछ पर कंघी फेरते, भालू उन योजना की बात बताता रहा जो उसने 'अपनी पूंछ' को लेकर बनाई थीं।





मैं इसे घुंघराली बनाऊंगा। इसे गुलाबी रंग में रंगूंगा। और तब इसे रिबन और क्लिपों से सजाऊंगा। तब पतझड़ में इसे मूंड दूंगा, ताकि पतझड़े में सोने के लिए इसके रोओं से एक नरम तकिया बना सकूं।"





''तुम कतई ऐसा कुछ नहीं करोगे,''
लोमड़ ने चौकी से कूद कर उठते हुए कहा।
''तुम अपना शहद पकड़ो। हमारा सौदा रद्द हुआ!''



''कतई नहीं,'' भालू ने अड़ कर कहा।
''कोई बेवकूफ ही ऐसी खूबसूरत पूंछ का सौदा
आधी बोतल शहद के लिए करेगा।''
''तो तुम्हें और क्या चाहिए?'' भौंचक लोमड़ ने पूछा।
''शहद के अलावा मुझे बढ़िया पनीर, शाहबलुत के फलों
की बोरी और पके मीठे अंगूर भी चाहिए।''
''क्या मज़ाक लगा रखा है?'' लोमड़ चीखा।
''तो फिर मुझे अपनी पूंछ अभी, इसी वक्त चाहिए!'' भालू ने कहा।

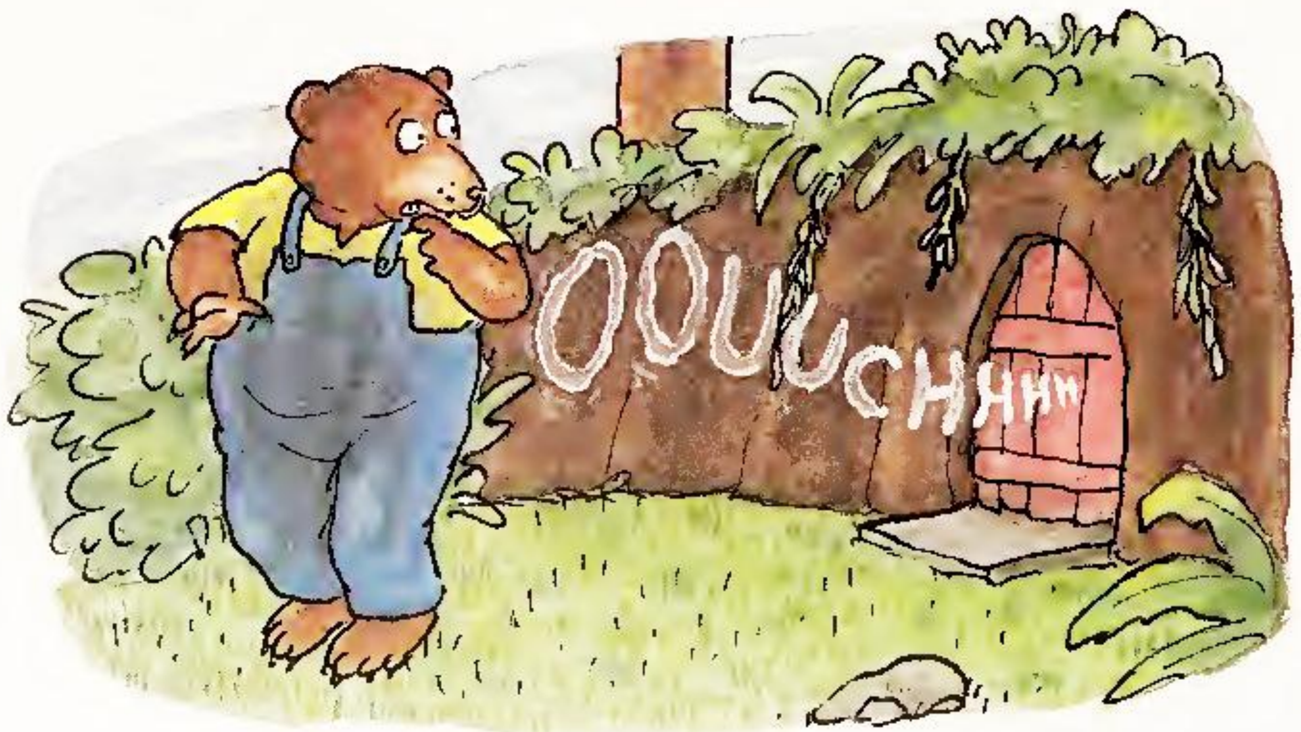


ठीक है,'' लोमड़ बोला। ''मैं तुम्हें पूंछ देता हूँ, पर तुम्हें बाहर इन्तज़ार करना होगा। आख़िर यह एक गंभीर ऑपरेशन जो है।''



''मैं तुम्हें दस मिनट देता हूँ,'' भालू बोला।
''पर कोई चालबाज़ी न करना।''

भालू धीरज धरे बाहर खड़ा रहा। तब उसने अचानक अन्दर से आती एक दर्द भरी चीख सुनी।






कुछ मिनटों में लोमड़ कमर के गिर्द एक बड़ा तौलिया लपेटे, लंगड़ाता हुआ बाहर आया।

''क्या तुमने सचमें पूंछ काट दी?'' भालू ने घबरा कर पूछा।

''क्या तुम यही नहीं चाहते थे?'' लोमड़ ने सवाल किया।

''हाँ,'' भालू बोला। ''पर जो तुम मुझे पकड़ा रहे हो, वह तो झाड़ू जैसा लग रहा है।''

''काटने के बाद पूंछ ऐसी ही लगती है,'' लोमड़ ने जवाब दिया, और उसे भालू के पैरों के पास पटक दिया।



जैसे ही लोमड़ अन्दर जाने को मुड़ा, लिपटा तौलिया खुल कर नीचे गिरा और उसकी असली पूंछ निकल आई।

''झूठे कहीं के, यह तो झाड़ू है।''

इतना कह भालू ने लोमड़ की असली पूंछ झपट कर पकड़ ली।





''रहम करो! छोड़ो!'' लोमड़ गिड़गिड़ाया। ''मैं तो बस मज़ाक कर रहा था। जो कुछ तुमने मांगा था, वह सब दूंगा। और अपनी पूंछ भी पहनने दूंगा। पर सिर्फ़ एक बार।'' लोमड़ ने आगे जोड़ा।

नदी किनारे भालू के दोस्त यह सोचते इन्तज़ार कर रहे थे कि उसे इतनी देर क्यों लग रही है। आख़िरकार भालू नज़र आया, एक खुबसूरत पूंछ के साथ।





"अरे उसने सचमें अपनी पूंछ तुम्हें दे दी?" भौंचक हो कौए ने पूछा।

"और वह सब भी जो उसने हम सब से हड़पा था," भालू ने कहा।

"पर यह तुमने किया कैसे?" खरगोश ने जानना चाहा।

"तुम लोगों की मदद से," भालू ने कहा। "अब चलो अपन सब पिकनिक करते हैं।"

"हमें शायद लोमड़ को भी न्यौता देना चाहिए था," गधे ने कहा।

"उसकी कोई ज़रूरत नहीं," भालू बोला।

उसने अपना जैकेट उतारा - सबको लोमड़ दिख गया।





जैकेट उतारते ही भालू की पीठ पर बंधा लोमड़ नीचे सरक गया। वह बिना कुछ कहे वहाँ से फौरन चम्पत हो गया, और फिर कभी जंगल के उस हिस्से में नज़र न आया।



# लोमड़ कथा

**लेखन व चित्रः योसी अबोलाफिया**

**भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा**

लोमड़ की पूंछ बिकाऊ है, कम से कम लोमड़ ने तो यही कहा था।

"मैं अपनी खुबसूरत झबरी पूंछ तुम्हारी आधी खाली शहद की शीशी के बदले तुम्हें दे दूंगा," लोमड़ ने भालू से कहा।

पलक झपकते ही वह भालू के शहद के साथ गायब हो गया। लोमड़ इसके पहले कौए से उसका पनीर, खरगोश से उसके मीठे अंगूर और गधे से उसके शाहबलूत के फल हड़प चुका था। अब सभी जानवरों ने मक्कार लोमड़ को सबक सिखाने की सोची।

पर क्या वे चतुर लोमड़ छका पाए?

**योसी अबोलाफिया** कई बाल पुस्तकों के लेखक व चित्रकार हैं। वे अपनी पत्नी ओर तीन बच्चों के साथ येरुशेलम में रहते हैं।